"प्रश्न-पत्र पर क्रमांक (रोल नम्बर) के अतिरिक्त कुछ भी न लिखें, अन्यथा इसे अनुचित साधनों का प्रयोग माना जायेगा तथा नियमों के अनुसार कार्यवाही की जायेगी।"

"Do not write anything on question-paper except Roll Number, otherwise it shall be deemed as an act of indulging in unfair means and action shall be taken as per rules."

Roll No. ....

B.A. (S-II) (R+P)

5058 NEP

Hin.

B.A. Semester II (Regular + Private) Examination, 2024

(Level - 5)

HINDI

CORE COURSE–I–HIN5002T

मध्यकालीन हिन्दी कविता

Time Allowed : **Three** Hours

Maximum Marks : **70**

भाग–अ

नोट :– भाग-अ के सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न के उत्तर की सीमा **30** शब्द है। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है।

10×2=20

भाग–ब

नोट :– (i) सम्पूर्ण पाठ्यक्रम में से विकल्प सहित कुल **चार** व्याख्याएँ शब्द-सीमा **250** शब्द है। **5×4=20**

(ii) प्रत्येक इकाई से **एक** प्रश्न का चयन करते हुए, कुल **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग **500** शब्दों का हो। प्रत्येक प्रश्न 10 अंक का है। **3×10=30**

भाग–अ

1. निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) 'दुलहनी गावहु मंगलाचार।' पंक्ति में कबीर का 'दुलहनी' शब्द से क्या अर्थ है ? लिखिए।

(ii) कबीर की भक्ति किस प्रकार की है ? लिखिए।

(iii) जायसी ने 'चित्तौड़' को किसका प्रतीक माना है ? लिखिए।

(iv) राजा रत्नसेन की पत्नियों के नाम बताइए।

(v) सूर ने किस प्रकार की भक्ति को अपने पदों में लिया है ?

(vi) तुलसीदास का बचपन का क्या नाम था ?

(vii) तुलसीदास के गुरु का नाम बताइए तथा उनकी भक्ति भावना का नाम लिखिए।

(viii) बिहारी की काव्य-कला की **दो** विशेषताएँ लिखिए।

(ix) घनानंद किस दरबारी कवि के आश्रय में रहता था ? लिखिए।

(x) सन्देह एवं भ्रान्तिमान अलंकार में कोई **एक** अन्तर लिखिए।

भाग–ब

नोट :– प्रश्न 2, 3, 4 एवं 5 में से प्रत्येक इकाई से विकल्प सहित कुल चार व्याख्यायें (शब्द सीमा 250)।

इकाई–I

2. भगति भजन हरि नाँव है, दूजा दुक्ख अपार।
मनसा वाचा कर्मना, कबीर सुमिरण सार॥

अथवा

पंच संगी पिव पिव करै, छठा जु सुमिरै मंन।
आई सूति कबीर की, पाया राम रतंन॥

इकाई–II

3. नागमती चितउर पंथ हेरा, पिय जो गए फिरि कीन्ह न फेरा।
नागरि नारि काहुँ बस परा, तेहूँ बिमोही मोसौं चितु हरा।
सुवा काल होइ लेगा पीउ, नहि लेत लेत बरु जीऊ।

अथवा

सारस जोरी किमी हरी मारि गएउ किन खग्गि।
झुरि झुरि पाँजर छनि भई बिरह कै लागी अग्गि॥

इकाई–III

4\. मुनि कहुँ राम दण्डवत कीन्हा,

आसिर बादु बिप्रवर दीन्हा।

देखि राम छबि नयन जुड़ाने,

करि सनमानु आश्रमहिं आने।

मुनिवर अतिथि प्रान प्रिय पाए।

कंद मूल फल मधुर मगाए।

अथवा

सुनि मुन बचन प्रेम रस साने,

सकुचि राम मन महुं मुसुकाने।

बालमीकि हंसि कहहिं बहोरी,

बानी मधुर अमिअ रस बोरी॥

इकाई–IV

5\. सनि–कज्जल चख–झख–लगन

उपज्यौ सुदिन सनेहु।

क्यों न नृपति है भोगवे

लहि सुदेसु सबु देहु॥

अथवा

भोर ते सांझ लौ कानन और निहार ति बावरी नैकु न हारति

साँझ ते भोर लौं तारनि ताकिबो तारनि सौं इकतार न टारति।

जौ कहूँ भावतो दीठि परै घनानंद आंसुनि औसर गारति।

मोहन सोहन जोहन की लागियै रहै आँखिन के उर आरति॥

नोट :– निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

6. कबीर के समाज सुधारक रूप को स्पष्ट कीजिए।

7. सूर के वात्सल्य वर्णन पर प्रकाश डालिए।

8. तुलसीदास की समन्वय भावना पर एक लेख लिखिए।

9. "घनानंद प्रेम की पीर के कवि हैं।" कथन की पुष्टि कीजिए।

10. निम्नलिखित छंद-अलंकारों का सामान्य परिचय दीजिए :

(अ) (i) दोहा

(ii) इन्द्रवज्रा

(ब) (i) अनुप्रास

(ii) वक्रोक्ति

JNVU PYQs

www.kashibishnoi.com

PYQ | Syllabus

Arts | Science

JNVU
&
Other Universities

For Free PDF Notes

www.kashibishnoi.com

english_by_kashi_bishnoi_ap
englishbykashibishnoi
Learn English with Kashi Bishnoi

YouTube
Asst. Prof. Kashi Bishnoi